MPPSC MAINS

मध्य प्रदेश का इतिहास

(Paper-1, part-A, unit-2)

प्रमोद राणा सर

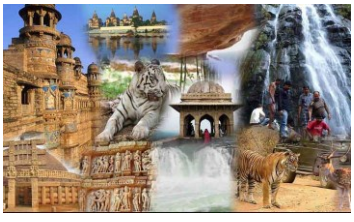

मध्य प्रदेश का इतिहास
(Paper-1, part-A, unit-2)

पाठ्यक्रम

मुख्य परीक्षा

इकाई-2

- प्रागैतिहासिक एवं आद्य-ऐतिहासिक मध्य प्रदेश, मध्य प्रदेश के प्रमुख राजवंश, गर्दभिल्ल वंश, नागवंश, औलिकर, परिव्राजक राजवंश, उच्च कल्प वंश, गुर्जर-प्रतिहार, कल्चुरी, चंदेल, परमार, तोमर, गोंडवंश, कच्छपघात वंश।

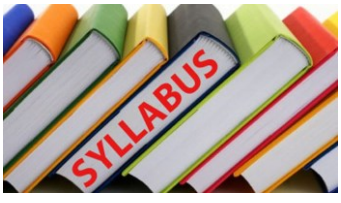

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास
(Paper-1, part-A, unit-2)

मुख्य परीक्षा

रोडमैप

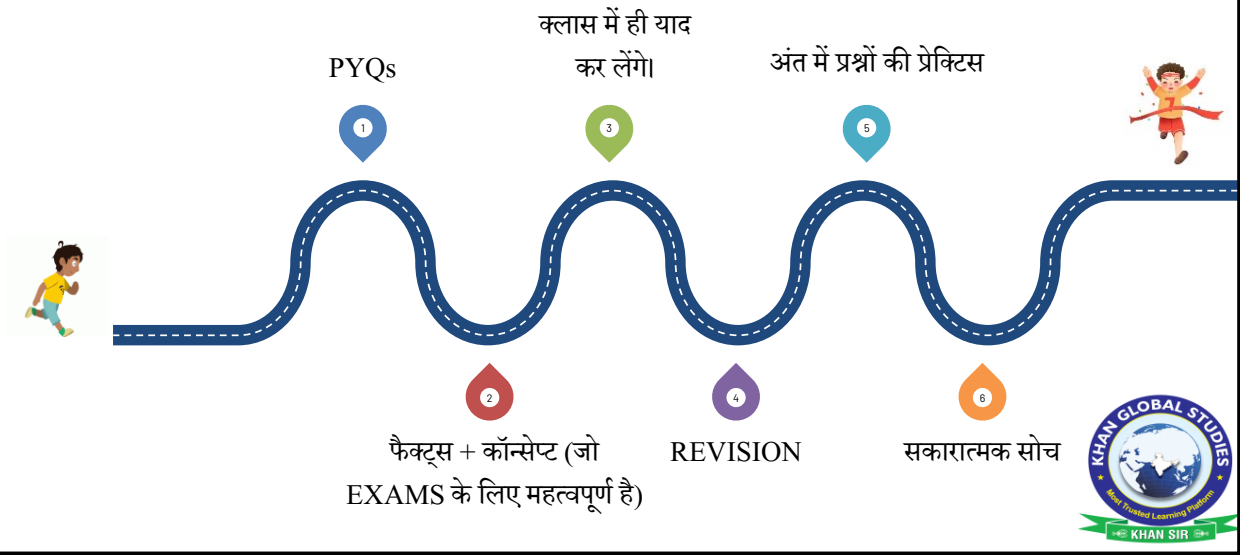

मध्य प्रदेश का इतिहास
(Paper-1, part-A, unit-2)

PYQs

मुख्य परीक्षा

- भीमबैटका को किस वर्ष विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया। (2022) (2 MARKS)
- कलचुरी कालीन चौसठ योगिनी मंदिर का निर्माण कब और किसने कराया था। (2022) (2 MARKS)
- राजा भोज द्वारा रचित किन्हीं दो ग्रंथों का नाम लिखिए। (2022) (2 MARKS)
- गोंडवाना कालीन मध्य प्रदेश के बारे में लिखिए। (2022) (7 MARKS)
- जेजाकभुक्ति (2021) (2 MARKS)
- चंदेल शासक विद्याधर की उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए। (2019) (10 MARKS)
- जगनिक के साहित्यिक योगदानों पर प्रकाश डालिए। (2019) (7 MARKS)
- भोज परमार (1010-1055) की राजनीतिक तथा सांस्कृतिक उपलब्धियों का मूल्यांकन कीजिए। (2018) (10 MARKS)

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास
(Paper-1, part-A, unit-2)

PYQs

मुख्य परीक्षा

- रानी दुर्गावती तथा मुगल सेना के मध्य हुए युद्ध का वर्णन कीजिए। (2016) (7 MARKS)
- सल्तनत कालीन मालवा के सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालिए। (2016) (10 MARKS)
- भोज परमार की उपलब्धियों के आधार पर उसका मूल्यांकन कीजिए। (2015) (10 MARKS)

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास
(Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

मध्य प्रदेश का इतिहास

- म.प्र. का प्राचीन इतिहास
- म.प्र. का मध्यकालीन इतिहास
- म.प्र. का आधुनिक इतिहास

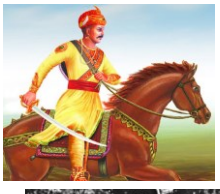

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास
(Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

मध्य प्रदेश का इतिहास

प्रागैतिहासिक काल

लिखित साक्ष्य उपलब्ध नहीं है।
पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध है।
उदाहरण – पाषाण काल

आद्य ऐतिहासिक काल

लिखित साक्ष्य उपलब्ध है, परंतु लिपि अभी तक पढी नहीं जा सकी है।
उदाहरण- सैंधव सभ्यता तथा वैदिक सभ्यता

पूर्ण ऐतिहासिक काल

पुरातात्विक एवं साहित्यिक दोनों साक्ष्य उपलब्ध
यह काल पुरातात्विक, साहित्यिक तथा विदेशी यात्रियों के वर्णन पर निर्भर है।
उदाहरण- वैदिक काल से आगे

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास
(Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

पाषाण काल

- यहां पर ऐतिहासिक स्थलों के उत्खनन व शोधों के उपरांत प्राप्त हुए उपकरणों की बनावट के आधार पर यहां के इतिहास का आरंभ पाषाण युग से माना जाता है।
- म.प्र. में पाषाण काल में लिपि लेखन का विकास नहीं हुआ था।
- म.प्र. में पाषाण काल की जानकारी का सर्वप्रमुख स्त्रोत पुरातात्विक साक्ष्य है।
- इस काल के प्रमुख स्थल भीमबैटिका, आदमगढ, महादेव पिपरिया, नर्मदा घाटी, सोन नदी घाटी, सोनार नदी घाटी आदि।
- प्रमुख स्थल- नर्मदा सोन घाटी, भीमबैटका (रायसेन), आदमगढ (नर्मदापुरम), महादेव पिपरिया (नर्मदापुरम), भेड़ाघाट (जबलपुर), सोन नदी घाटी क्षेत्र, बरमान घाट (नरसिंहपुर), करेली (नरसिंहपुर), देवाकछार (नरसिंहपुर), रातीकरार (नरसिंहपुर), भूतरा (नरसिंहपुर), पहाड़गढ गुफा (मुरैना) आदि।
-

PRESENTED BY PRAMOD RANA

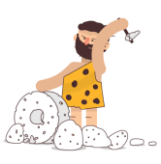

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

पाषाण काल

- पुरा पाषाण काल — (अज्ञात काल से 10,000 ई.पू.)
- मध्य पाषाण काल — (10,000 से 5500 ई.पू.)
- नव पाषाण काल — (5500 से 3000 ई.पू.)

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

पुरा पाषाण काल

- कालखण्ड- अज्ञात काल से 10,000 ई.पू.
- यह वह समय था, जब मनुष्यों ने पत्थरों का प्रयोग करना सीखा।
- इस युग का महत्वपूर्ण कार्य था, मानव द्वारा आग जलाना सीखना, परंतु उस पर नियंत्रण बाद के कालों में हुआ।
- इस समय मानव जीवन खानाबदोश था, जो कि शिकार पर आश्रित था, इसलिए यह काल आखेटक एवं खाद्य संग्रहण काल के रूप में जाना जाता है।

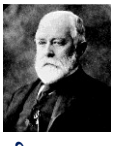

- भारत में प्रथम साक्ष्य- 1863 – रॉबर्ट ब्रुसफट (तमिलनाडु में)
- मध्य प्रदेश में पुरापाषाण कालीन स्थल हैं- नर्मदा घाटी, सोन घाटी, बेतवा घाटी, जावरा, रायसेन, हथनौरा, ग्वालियर, महादेव पिपरिया, नरसिंहपुर, भीमबैटका एवं पंचमढी आदि।

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

पुरा पाषाण काल

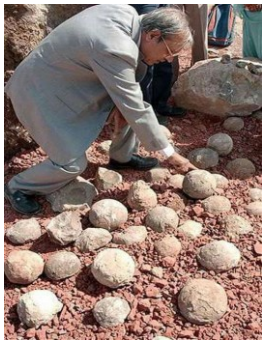

- स्थल- हथनौरा
  - ✓ अवस्थिति- सीहोर
  - ✓ उत्खननकर्ता- अरूण सोनकिया (1982)
  - ✓ विशेषता-
    - ❖ मानव खोपडी (नर्मदा मानव)(ये खोपडी होमोइरेक्टस नर्मदेसिस की है) के साक्ष्य मिले हैं, जो अब तक के भारत में प्राप्त मानव अवशेषों में सबसे प्राचीन है।
    - ❖ हथनौरा के पास प्राचीनतम विलुप्त हाथी के दोनों दांत तथा ऊपरी जबडे का जीवाश्म भी खोजा।

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

पुरा पाषाण काल

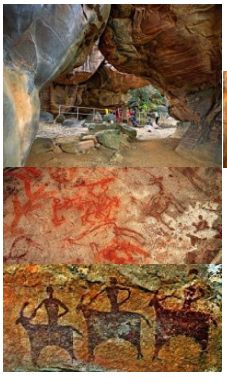

- स्थल- भीमबैटका
  - ✓ अवस्थिति- रायसेन जिले के अब्दुल्लागंज में
  - ✓ खोज- विष्णु वाकणकर (1957-58)
  - ✓ विशेषता-
    - ❖ भीमबेटका से प्राप्त 500 गुफा चित्रों में से 5 पुरापाषाण काल के तथा शेष मध्यपाषाण काल के हैं।
    - ❖ भीमबैटका में आदिमानव के साक्ष्य प्राप्त हुए है।
    - ❖ 1962 में यहां पर मानव शैलाश्रयों की खोज हुई।
    - ❖ भीमबेटका क्षेत्र को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, भोपाल मंडल ने अगस्त 1990 में राष्ट्रीय महत्त्व का स्थल घोषित किया।
    - ❖ इन रॉक शेल्टर को 2003 में वर्ल्ड हेरिटेज साइट घोषित किया गया था।

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

पुरा पाषाण काल

- स्थल- गुप्तेश्वर
  - ✓ अवस्थिति- ग्वालियर
  - ✓ विशेषता-
    - ❖ चम्बल घाटी में स्थित स्थल है।
    - ❖ गुप्तेश्वर से प्राप्त उपकरणों में कोर, ब्लैड, माइक्रोलिथ आदि उपकरण प्राप्त हुए।
    - ❖ मध्यपाषाण काल के भी साक्ष्य मिलते हैं।
    - ❖ मानव शिशु का कुचला सिर प्राप्त हुआ है।
    - ❖ वर्तमान में गुप्तेश्वर स्थल पर भगवान भोलेनाथ का मंदिर चर्चित है।

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

पुरा पाषाण काल

- होशंगाबाद तथा नरसिंहपुर के बीच स्थित नर्मदा घाटी में पुरापाषाण कालीन जीवाश्म की प्राप्ति हुई है।
- ग्वालियर के निकट बी.बी. लाल ने उत्खनन करके अनेक पुरापाषाणकालीन उपकरणों की खोज की।
- जबलपुर के निकट भेडाघाट से भी अनेक पुरापाषाणकालीन औजार मिले हैं।
- निसार अहमद द्वारा सोन घाटी में किए गए उत्खनन से कई स्थानों पर पुरापाषाण कालीन अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- डॉ. एच.डी. सांकलिया तथा सुपेरकर को महादेव पिपरिया, नरसिंहपुर से 860 औजार प्राप्त हुए हैं। यहां – महादेव मंदिर। महादेव पिपरिया की खोज 1961 में खत्री ने की थी।
- नरसिंहपुर के निकट भुतरा नामक स्थान से पाषाणकालीन स्थल प्राप्त हुए हैं, जो म.प्र. के सबसे प्राचीन उपकरण माने जाते हैं।
- नरसिंहपुर के करेली में शक्कर नदी के किनारे प्राचीन शैलचित्र मिले।
- सबसे ज्यादा स्तनधारी के साक्ष्य भेडाघाट से मिले हैं, उत्खनन कर्ता – निसार अहमद।
- कसरावद खरगौन जिले में है।

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

मध्य पाषाण काल

- कालखण्ड- (10,000 से 5500 ई.पू.)
- इस काल में प्रयुक्त होने वाले पत्थरों के उपकरण अत्यंत छोटे होते थे, इसलिये इन्हें माइक्रोलिथ कहा गया।
- 1867 में ए.सी.एल. कार्लाइल – मध्य पाषाणकालीन स्थलों की सर्वप्रथम पहचान विंध्य क्षेत्र में की।
- मध्य प्रदेश में मध्य पाषाण कालीन स्थल हैं- आदमगढ, बाघ, भीमबैटका, खेड़ीनामा (नर्मदापुरम), पंचमढ़ी आदि।

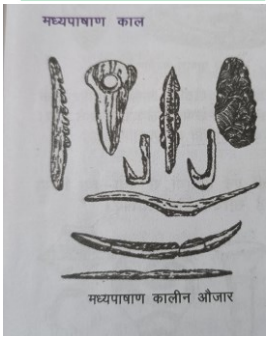

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

मध्य पाषाण काल

- स्थल- आदमगढ़
  - ✓ अवस्थिति- होशंगाबाद (नर्मदा नदी के किनारे)
  - ✓ खोज-आर.बी. जोशी तथा एन.ई. खरे – 1961 में।
  - ✓ विशेषता-
    - ❖ यहां से मानव के पशुपालक होने के साथ-साथ मानव शव के साथ कुत्ते के दफनाये जाने का प्रमाण भी मिलता है।
    - ❖ नर्मदा के दक्षिणी तट पर
    - ❖ ज्यादा धार वाले औजार
    - ❖ चट्टनों पर चित्रकारी
    - ❖ गुफाओं में आवास

आदम गढ में पत्थरों पर की गई चित्रकारी

आदम गढ में पत्थरों पर की गई चित्रकारी

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

मध्य पाषाण काल

- धार जिले में स्थित प्रसिद्ध बाघ गुफाओं के पास मध्य पाषाणकाल से लेकर नवपाषाण काल तक के उपकरणों की प्राप्ति हुई है।
- खेडीनामा (होशंगाबाद) से भी मध्यपाषाणकाल के साक्ष्य मिले हैं।
- होशंगाबाद के पंचमढी में मध्यपाषाण काल के 2 शैलाश्रय प्राप्त हुए हैं:- 1. जम्बूद्वीप 2. डोरथी द्वीप
- बी.बी मिश्रा ने भीमबेटका में इस युग के ब्लेड अवयवों के विकास को अनुरेखित किया है।

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

नव पाषाण काल

- कालखण्ड- 5500 से 3000 ई.पू.
- इस काल में स्थायी निवास तथा कृषि के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- मध्य प्रदेश एरण, गडीकोयला (सागर), कुंडम (जबलपुर), होशंगाबाद, छतरपुर, हटा+संग्रामपुर घाटी (दमोह), भोपाल में मनुआभान टेकरी, नेवरी गुफा, श्यामला हिल्स, बैरागढ, मामा भांजा शैलाश्रय आदि।
- इस काल में शिकार करना बंद हो गया।
- कृषि पर जोर दिया गया।
- मृदभांड, वस्त्र निर्माण के साक्ष्य।
- भोपाल में श्यामला पहाडी के शैलाश्रयों से अनेक खांचेदार क्रोड तथा लघु पाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- भोपाल के बैरागढ से नवपाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं।

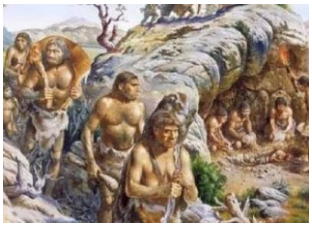

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

नव पाषाण काल

- जबलपुर में नर्मदा नदी के तिलवाडा घाट तथा लमेटाघाट से नवपाषाणकालीन बस्तियों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
- इसके अतिरिक्त सोन नदी घाटी, बनास तथा मोहन नदी घाटी के मध्य अनेक नवपाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- विशेष – दमोह जिले के दक्षिण-पूर्व में स्थित सिंग्रामपुर घाटी से वर्ष 1866 ई. नवपाषाणकालीन अवशेषों की प्राप्ति हुई है।
- बॉकी
  - ✓ अवस्थिति- सोन नदी घाटी में स्थित।
  - ✓ उपकरण, मानव निवास स्थल, झोंपड़िया तथा कृषि के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

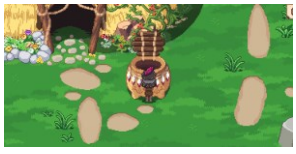

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

उत्तर पाषाण काल

- इसे सूक्ष्म पाषाण काल भी कहा जाता है।
- छोटे-छोटे औजार
- क्वार्टज के पत्थर
- स्थल – शहडोल, होशंगाबाद, उज्जैन।

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

➢ मध्य प्रदेश के प्रमुख शैलाश्रय तथा शैलचित्र

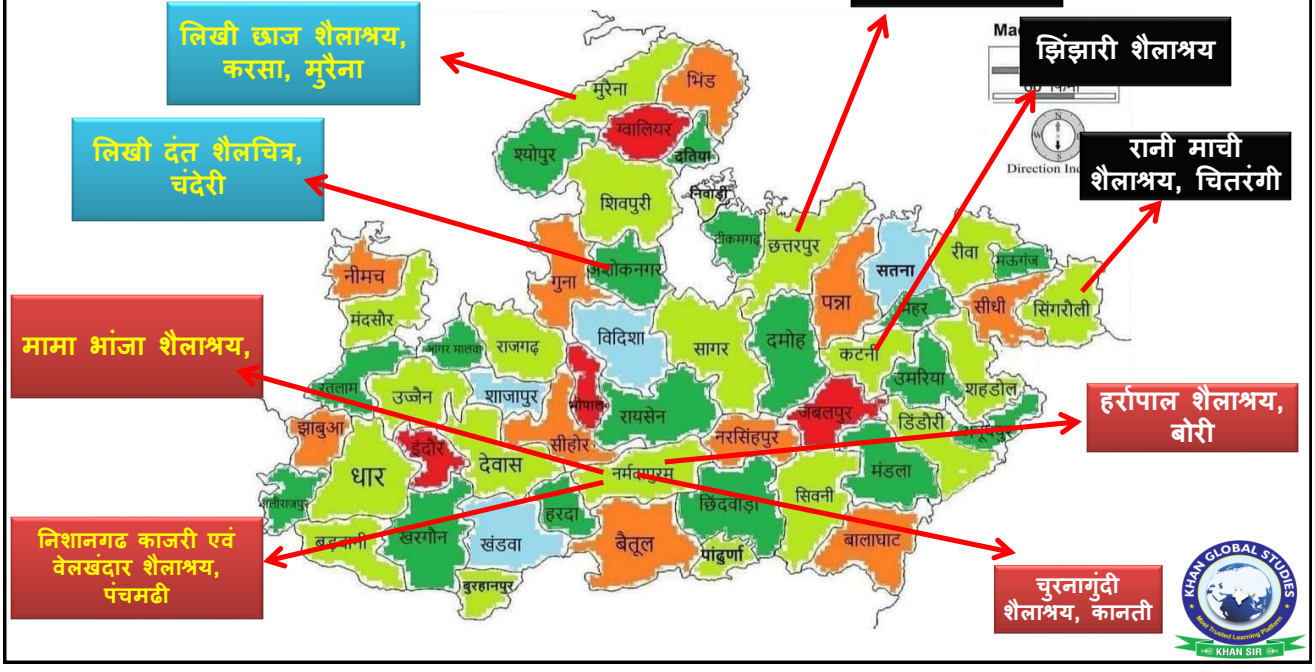

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

ताम्र पाषाण काल

- इस काल में पत्थर के साथ तांबे का प्रयोग होने लगा था।
- इस काल के साक्ष्य उत्तर भारत से मिले, जिसमें म.प्र. भी महत्वपूर्ण है।
- इस काल में स्थानों पर उत्खनन से मृदभांड, धातु निर्मित बर्तन एवं उपकरण प्राप्त हुए हैं।
- मध्य प्रदेश में ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति के अवशेष मालवा, नवदाटोली, कायथा, ऐरण, बेसनगर, डांगवाला आदि स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

- मालवा संस्कृति
  - ✓ प्रमुख स्थल:- कायथा तथा डांगवाला (उज्जैन), ऐरण (सागर) तथा नवदाटोली (खरगौन), खेड़ीनामा (नर्मदापुरम)।
  - ✓ मालवा संस्कृति अपनी उत्कृष्ट मृदभांड के लिये जानी जाती है।
  - ✓ म.प्र. में सर्वप्रथम नवदाटोली व महेश्वर के उत्खनन से ताम्रपाषाणिक सभ्यता सामने आई।

PRESENTED BY PRAMOD RANA

PRESENTED BY PRAMOD RANA

KHAN GLOBAL STUDIES KHAN SIR

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

ताम्र पाषाण काल

- स्थल- कायथा (उज्जैन)
  - ✓ अवस्थिति- उज्जैन
  - ✓ उत्खनन – वी.एस. वाकणकर ने 1964 ई. में। (नदी- छोटी कालीसिंध नदी)
  - ✓ विशेषता- इसे म.प्र. की प्रथम ताम्रपाषाण बस्ती माना जाता है।
  - ❖ कायथा के मृदभांडों पर प्राक-हडप्पा, हडप्पा और हडप्पोत्तर संस्कृति का प्रभाव दिखाई देता है।
  - ❖ कायथा से 3 संस्कृति के साक्ष्य- कायथा, आहड़ तथा मालवा।
  - ❖ विष्णु वाकणकर ने कायथा खोज को कायथा सभ्यता नाम दिया। चारों तरफ दीवारों से घिरा है।
  - ❖ कायथा के टीले पर ताम्रपाषाण युग से लेकर गुहाकाल तक के स्तर मिले हैं।
  - ❖ यहां से मानको के साक्ष्य मिले हैं। रेडियो कार्बन डेटिंग से इसका समय – 2200 ई.पू. से 2000 ई.पू. के बीच का है।
  - ❖ कायथा से पालतू मवेशियों, कछुओं तथा घोड़ों की हड्डियों के साक्ष्य मिले हैं।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

ताम्र पाषाण काल

- स्थल- डांगवाला (उज्जैन)
  - ✓ अवस्थिति- उज्जैन
  - ✓ उत्खनन – वी.एस. वाकणकर ने 1979 ई. में।
  - ✓ विशेषता- यहां से ताम्रपाषाणकालीन साक्ष्य मिले हैं।
  - ❖ यहां से 2000 ई.पू. से परमार वंश तक के साक्ष्य की जानकारी मिली है।
  - ❖ गढपालिका स्तूप, मृदभांड (ज्यामिती व जंतुओं की आकृति)
  - ❖ दो बार आग लगने के साक्ष्य मिले हैं, ब्राह्मी लिपि में लिखा सिक्का।
  - ❖ चावल, गेहूं, मूंग की दाल के साक्ष्य।
  - ❖ यहां की साम्रगियों में पक्की मिट्टी की वृषभ मूर्ति तथा तश्तरियां, हिरण, सांभर, बैल आदि की हड्डियां व अनाज के साक्ष्य मिले हैं।

PRESENTED BY PRAMOD RANA

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

ताम्र पाषाण काल

- स्थल- ऐरण (सागर)
  - ✓ अवस्थिति- सागर
  - ✓ उत्खनन– कृष्णदत्त वाजपेयी। (1960-61) (नदी- बीना)
  - ✓ विशेषता- काले-लाल चित्रित मृदभांड, तांबे की आदिम कुल्हाड़ी, शंख की चुड़ियां आदि के साक्ष्य।
    - ❖ इस स्थल पर चार सांस्कृतिक स्तर मिले हैं। प्रथम ताम्रपाषाण कालीन, द्वितीय लौहयुगीन तथा अन्य दो परवर्ती हैं। यहाँ से पंचमार्क सिक्कों के भारी भण्डार मिले हैं।
    - ❖ एरण गुप्त काल में महत्वपूर्ण नगर था।
    - ❖ गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के एक शिलालेख में एरण को 'एरकिण' कहा गया है। इस अभिलेख को कनिंघम ने खोजा था।
    - ❖ एरण से एक अन्य अभिलेख प्राप्त हुआ है, जो 510 ई. का है। इसे 'भानुगुप्त का अभिलेख' कहते हैं। इस अभिलेख को एरण का सती अभिलेख भी कहा जाता है।
    - ❖ यहां से एक मौर्यकालीन ब्राह्मी लिपि में सिक्का मिला है।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

ताम्र पाषाण काल

- स्थल- नवदाटोली (खरगौन)
  - ✓ अवस्थिति- खरगौन
  - ✓ उत्खनन – एच.डी. सांकलिया (हंसमुख धीरजलाल सांकलिया) (1957-58) तथा महाराज सयाजीराव। (नदी- नर्मदा नदी)
  - ✓ विशेषता- यहाँ से प्राप्त मृद्भाण्डों को मालवा मृद्भाण्ड भी कहते हैं।
    - ❖ हाथीदांत से बने आभूषण के साक्ष्य मिले हैं।
    - ❖ घोड़े के कोई भी अवशेष इस स्थान से नहीं मिले है।
    - ❖ नवदाटोली से कृषि के साक्ष्य, शंख की मूर्तियां, हाथीदांत से बनी एक मातृ देवी की मूर्ति।
    - ❖ शील जिस पर ब्राह्मी लिपि में वराह अवतार लिखा है।
    - ❖ रोमन सभ्यता के कुछ सिक्के मिले हैं।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

ताम्र पाषाण काल

- स्थल- आवरा
  - ✓ अवस्थिति- मंदसौर
  - ✓ उत्खनन – एच. व्ही. त्रिवेदी।
  - ✓ विशेषता-
    - ❖ यहां से ताम्रपाषाणिक सामग्री व रोम सभ्यता से संपर्क के साक्ष्य मिलते हैं।
    - ❖ चंबल डैम बनने के बाद इस स्थल का विनाश हो गया।
    - ❖ मकान की नींव के साक्ष्य, तांबे की कुल्हाड़ी के साक्ष्य।
    - ❖ हड्डियों के उपकरण।
    - ❖ यहां से ताम्रपाषाणकालीन से लेकर गुप्तकाल तक की विभिन्न अवस्थाएं एवं संबंधित सामग्री मिली है।

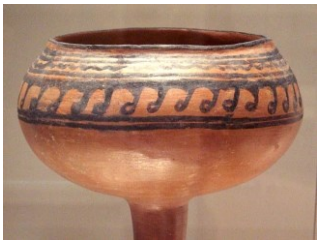

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

ताम्र पाषाण काल

- स्थल- बेसनगर
  - ✓ अवस्थिति- विदिशा में बेतवा नदी के तट पर।
  - ✓ उत्खनन –डी.आर. भंडारकर लेकिन प्रथम बार 1910 ई. में उत्खनन एच.एच. लेक ने कराया।
  - ✓ प्राचीन नाम – भेलसा / बेसनगर।
  - ✓ विशेषता-
    - ❖ इस स्थल से नवपाषाणकाल, ताम्रपाषाणकाल से लेकर मौर्योत्तर काल तक के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

ताम्र पाषाण काल

- अन्य प्रमुख स्थल
  - ✓ नागदा – उत्खननकर्ता – अमृत पांडेय व एन.आर. मुखर्जी। स्थान – उज्जैन जिले में चंबल नदी के किनारे।
  - ✓ खलघाट (धार), इंदरगढ (मंदसौर), कसरावद (खरगौन), आजाद नगर (इंदौर), डोंगरिया (बालाघाट)।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

ताम्र पाषाण काल

- जोर्वे संस्कृति या जोर्वे मृदभांड
  - ✓ यह संस्कृति मुख्यत: महाराष्ट्र के जोर्वे नामक स्थान पर विकसित एवं विस्तृत थी एवं इस पुरास्थल में इस संस्कृति के अवशेष सर्वाधिक मात्रा में स्तरीकृत जमाव से प्राप्त हुए हैं, इस कारण से इस संस्कृति को जोर्वे संस्कृति की संज्ञा दी गयी।
  - ✓ इस संस्कृति का विस्तार म.प्र. के मालवा क्षेत्र में भी दृष्टिगोचर होता है।
  - ✓ इस संस्कृति के पात्रों को अच्छी तरह से सनी मिट्टी द्वारा तैयार किया जाता था, जो प्राय: पके, पतले एवं चॉक निर्मित होते थे।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

ताम्र पाषाण काल

- अहाड़ संस्कृति या कृष्ण लोहित मृदभांड
  - ✓ इस संस्कृति के मृदभांड अहाड़ (राजस्थान) नामक पुरास्थल से सर्वाधिक संख्या में प्राप्त हुए हैं।
  - ✓ म.प्र. में इन पात्रों (मृदभांडों) की प्राप्ति कायथा, नवदाटोली, कोटरा, नागदा एवं एरण आदि के निचले स्तरों से हुई है। इन पात्रों को अग्नि में डालकर एक विशिष्ट पद्धति से पकाया जाता था तथा इन्हें कृष्ण लोहित मृदभांड कहा जाता है।
  - ✓ नवदाटोली से इन मृदभाण्डों के अवशेषों के रूप में मुख्यत: कटोरे, प्याले, लोटे आदि प्राप्त हुए हैं तथा कोटरा से इस स्तर का एक विशेष पात्र हस्त निर्मित कोरूगेटेड हांडी है, जिन पर खुरचकर टेढी-मेढी लाईनों में हीरक के चित्र अंकित किए गये हैं।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

मध्य प्रदेश से संबंधित पुरातत्वज्ञ	
क्षेत्र	पुरातत्वज्ञ
नर्मदा घाटी सर्वेक्षण	सांकलिया, सुपेकर, आर.बी. जोशी, बी.बी.लाल, मेकब्राउन, टेरा, पीटरसन आदि
सोन घाटी सर्वेक्षण	निसार अहमद, जी.आर. शर्मा
रीवा-सतना क्षेत्र उत्खनन	जी.आर.शर्मा
चम्बल घाटी तथा अन्य ताम्रपाषाणिक सभ्यता	प्रो. विष्णु वाकणकर, एच.वी. त्रिवेदी, ए.पी. खत्री, एस.के. श्रीवास्तव, बी.बी लाल आदि।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

अन्य प्रमुख तथ्य (2 नंबर के प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण)

- मोहम्मदपुरा
  - ✓ अवस्थिति- गुना
  - ✓ प्रमुख प्रागैतिहासिक कालीन स्थल।
  - ✓ विशेष- सैण्डी – पेवली ग्रैवेल के साथ मिट्टी एवं सिल्ट का जमाव।
- चिचली
  - ✓ अवस्थिति- नरसिंहपुर
  - ✓ ताम्रपाषाणकालीन स्थल।
  - ✓ विशेष शंख निर्मित चूड़ियां, कर्णाभूषण के साक्ष्य।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

अन्य प्रमुख तथ्य (2 नंबर के प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण)

- नांदनेर
  - ✓ अवस्थिति- नर्मदापुरम
  - ✓ जोर्वे संस्कृति से संबंधित ताम्रपाषाणकालीन स्थल।
  - ✓ विशेष- प्लम लाल मृदभाण्ड के साक्ष्य प्राप्त।
- ओटा
  - ✓ अवस्थिति- नर्मदा घाटी क्षेत्र।
  - ✓ प्रागैतिहासिक कालीन स्थल।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

अन्य प्रमुख तथ्य (2 नंबर के प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण)

- समनापुर
  - ✓ अवस्थिति- नरसिंहपुर
  - ✓ प्रागैतिहासिक कालीन स्थल।
  - ✓ उत्खननकर्ता- वी.एन. मिश्र।
  - ✓ पुरापाषाणकालीन उपकरणों के साक्ष्य मिले हैं।
- जम्बूदीप शैलाश्रय
  - ✓ अवस्थिति- पंचमढ़ी (नर्मदापुरम)
  - ✓ उत्खननकर्ता- जी.आर. हंटर।
  - ✓ मध्य पाषाणकालीन प्रमुख स्थल।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

अन्य प्रमुख तथ्य (2 नंबर के प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण)

- बाजर शैलाश्रय
  - ✓ अवस्थिति- पंचमढ़ी (नर्मदापुरम)
  - ✓ मध्य पाषाणकालीन प्रमुख स्थल।
  - ✓ ज्यामितीय एवं अज्यामितीय तथा क्रोड उपकरणों की निर्माण सामग्री के साक्ष्य।
- पंचमढ़ी
  - ✓ अवस्थिति- नर्मदापुरम
  - ✓ मध्य पाषाणकालीन प्रमुख स्थल।
  - ✓ यहां अवस्थित शैलाश्रयों से कंकालों के अवशेष प्राप्त हुए हैं।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

अन्य प्रमुख तथ्य (2 नंबर के प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण)

- विष्णु श्रीधर वाकणकर
  - ✓ जन्म स्थान- नीमच (1919)
  - ✓ देशभर में चार हजार से ज्यादा शैलचित्रों की खोज और अध्ययन के कारण इन्हें भारतीय शैलचित्रों का पितामाह कहा जाता है।
  - ✓ वर्ष 1973 - पद्मश्री।
  - ✓ म.प्र. सरकार द्वारा इनके नाम पर वर्ष 2005-06 से पुरातत्वविदों को सम्मान दिया जाता है।
- जी.आर. शर्मा (गोवर्धन राय शर्मा)
  - ✓ जन्म – गाजीपुर (उ.प्र.)
  - ✓ विशेष- टोंस की सहायक नदी बेलन नदी पर खजुरी के पास प्रागैतिहासिक स्थल की खोज की।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

अन्य प्रमुख तथ्य (2 नंबर के प्रश्नों के लिए महत्वपूर्ण)

- अरूण सोनकिया
  - ✓ जन्म – हिरनखेड़ा गांव, सिवनी मालवा (होशंगबाद)
  - ✓ मृत्यु- 2018, होशंगाबाद
  - ✓ विशेष- 1982 में सीहोर के हथनौरा में मानव खोपड़ी के प्राचीनतम साक्ष्य खोजे, जिसे नर्मदा मानव कहा गया।
- एच.डी. सांकलिया (हंसमुख धीरजलाल सांकलिया)
  - ✓ जन्म – मुम्बई
  - ✓ एक भारतीय संस्कृत विद्वान और पुरातात्विक थे, जो प्राचीन भारतीय इतिहास में विशेषज्ञता रखते थे।
  - ✓ इन्हें 1974 – पद्मभुषण।
  - ✓ विशेष- महेश्वर एवं नवदाटोली स्थलों की खुदाई की।

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

संभावित प्रश्न

2 MARKS

- ✓ भीमबैटका (2009)
- ✓ भीमबैटका को किस वर्ष विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया। (2022)
- ✓ नवदाटोली (2019)
- ✓ कायथा
- ✓ डांगवाला
- ✓ एरण
- ✓ आदमगढ़
- ✓ हथनौरा
- ✓ लिखी छाज शैलाश्रय
- ✓ बेसनगर
- ✓ आवरा
- ✓ विष्णु वाकणकर
- ✓ महादेव पिपरिया
- ✓ अरूण सोनकिया

मध्य प्रदेश का इतिहास (Paper-1, part-A, unit-2)

प्रागैतिहासिक मध्य प्रदेश

मुख्य परीक्षा

संभावित प्रश्न

7 MARKS

- ✓ म.प्र. के प्रमुख पुरापाषाण कालीन स्थलों का वर्णन कीजिए।
- ✓ म.प्र. के प्रमुख ताम्रपाषाण कालीन स्थलों का वर्णन कीजिए।
- ✓ जोर्वे संस्कृति पर टिप्पणी कीजिए।
- ✓ आहाड़ संस्कृति का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

11 MARKS

- ✓ म.प्र. के प्रमुख पाषाण कालीन स्थलों का वर्णन कीजिए।
- ✓ म.प्र. के प्रमुख ताम्रपाषाण कालीन स्थलों का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

MPPSC MAINS

मध्य प्रदेश का इतिहास

(Paper-1, part-A, unit-2)

प्रमोद राणा सर